Dr.Sunita Kumari,
Guest Assistant Professor,
Dept. Of Home Science,
SNSRKS College, Saharsa
BA Part-III
Dt. 26/03/2022

Q. किशोरावस्था के समस्याएं क्या क्या हैं, वर्णन करें ?

किशोरावस्था को तनाव तथा तूफान की अवस्था कहा गया है। इस अवस्था को जीवन की सबसे कठिन अवस्था कहा गया है। यही वह अवस्था है जब किशोर न तो बालक रहता है एवं न पूर्ण बन पाता है। इसे परिवर्तन की अवस्था भी कहा गया है क्योंकि इस अवस्था में परिवर्तनों का अंबार लग जाता हैं। किशोर बालक-बालिकाओं में अनेक शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होते है। उनके संवेगात्मक, सामाजिक तथा नैतिक जीवन का स्वरूप बदल जाता हैं। बाल्यावस्था की विशेषताओं का लोप होने लगता है एवं नये-नये लक्षण जन्म लेने लगते हैं। यही वह अवस्था है जिसमें उनमें अदम्य उत्साह तथा अपूर्व शक्ति होती है जिनमें वे अपना अधिकतम विकास भी कर सकते हैं एवं अपना सर्वस्व गवां भी सकते हैं।

किशोरावस्था को समस्याओं की आयु अथवा समस्याओं की अवस्था भी कहा गया हैं क्योंकि इस अवस्था में जहाँ स्वयं किशोर बालक-बलिकायें अपने परिवार, विद्यालय, स्वास्थ्य, मनोरंजन, भविष्य, यौन आदि से संबंधित समस्याओं से जूझते हैं, वहीं उनके माता-पिता, संरक्षक, अध्यापक, समाज और राष्ट्र के लिए वे भी एक समस्या होते हैं। इस अवस्था में किशोर तथा किशोरियों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनमें किशोरावस्था की प्रमुख समस्यायें निम्नलिखित हैं--

1. स्वतंत्रता की समस्या

किशोरावस्था में आत्मप्रकाशन की भावना बड़ी प्रबल होती है। वे समाज की रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों का घोर विरोध करते हैं। वे माता-पिता के बंधन में बँधकर रहना नही चाहते। यदि उन पर नियंत्रण लगाया जाता है तो वे विद्रोह करने के लिए तैयार रहते हैं। किशोरों को घूमना-फिरना बहुत अच्छा लगता है। वे नये-नये स्थानों पर जाना पसंद करते हैं। उन्हें एक स्थान पर बंधकर रहना अच्छा नही लगता। जो माता-पिता किशोरों की इस स्वाभाविक प्रवृत्ति को अनुचित रूप से दबाते हैं, उनके बालकों में बेचैनी तथा निराशा उत्पन्न हो जाती है और वे उच्छृंखल एवं आवारा हो जाते हैं।

2. स्थिरता एवं समंजन की समस्या

जिस प्रकार शिशु की मन:स्थिति नही होती, उसी तरह किशोर बालक-बालिकाओं में भी अस्थायित्व होता है। उनका व्यवहार बहुत ही परिवर्तनशील होता हैं। रॉस ने किशोरावस्था को शैशवावस्था का पुनरावर्तन कहा है। शिशुओं की तरह किशोर चंचल होता है। उसे यह भ्रांति होती है कि वह दूसरे व्यक्तियों के आकर्षण का केंद्र है पर ऐसा हमेशा नही होता। शिशु की भाँति उसे अपने चारों तरफ के वातावरण से समंजन करना पड़ता हैं। वातावरण से समंजन में कठिनाई उसके शारीरिक तथा मानसिक विकास के कारण भी होती है। समंजन की समस्या कभी-कभार उसके लिए दुखदायी हो जाती है जो उसको चिंतित कर देती है। समंजन की समस्या के कारण कभी-कभी उनका व्यवहार अवांछनीय एवं अशोभनीय हो जाता हैं।

3. विरोधी मनोभावों की समस्या

किशोरावस्था में किशोर बालक-बालिकाओं में विरोधी मनोभाव चरमसीमा पर होते है। किसी क्षण वे बहुत ही सक्रिय दिखायी देते हैं एवं किसी क्षण अत्यधिक आलसी तथा निष्क्रिय। कभी वे अत्यधिक उत्साह से परिपूर्ण आत्म विरोध के घोतक होते हैं तथा इसका कारण संवेगात्मक ज्ञान योग का अभाव होता हैं।

4. प्रबल जिज्ञासा की समस्या

किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध में जिज्ञासा की प्रबलता हो जाती है। अब किशोर बालक-बालिकायें प्रौढ़ जीवन विषयक ज्ञान की खोज में लग जाते हैं। इस अवस्था में होने वाले नये-नये परिवर्तन उनकी जिज्ञासा को उद्दीप्त करने का कार्य करते हैं। विपरीत लिंग के लोगों के संबंध में उनकी जिज्ञासा बढ़ती जाती है क्योंकि उनके विषय में प्राप्त होने वाले अनुभव रूचिपूर्ण और आनंददायक होते हैं। किशोरों की जिज्ञासा का उचित समाधान अति आवश्यक हैं।

5. आत्म गौरव की समस्या

किशोरावस्था में आत्म गौरव की भावना का विकास होता हैं। इसका कारण उनके अंदर नवीन दृष्टिकोणों का विकसित होना है। वे जहाँ भी होते हैं, अपना सम्मान चाहते हैं। परिवार में, विद्यालय, समूह में वे अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते हैं।

कक्षा में मानीटर, खेलों में कप्तान, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परिषदों और कार्यक्रमों में वे कोई न कोई पद प्राप्त करना चाहते हैं, जिससे उनकी आत्म गौरव की भावना की संतुष्टि हो। ऐसा न होने पर वे संघर्ष एवं विद्रोह पर उतारू हो जाते हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए किशोरों को उनका उचित साथ दिये जाने की आवश्यकता हैं।

6. आत्म निर्भरता की समस्या

इस अवस्था में किशोर आत्मनिर्भर तथा स्वावलंबी बनना चाहते हैं क्योंकि एक तो उन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु धन की आवश्यकता होती है दूसरे वे यह मानने लगते हैं कि वे अब बड़े हो गये हैं एवं उन्हें माता-पिता पर बोझ नही बनना चाहिए। अनेक किशोर धन प्राप्ति के लिए अनैतिक तथा आपराधिक कार्यों में लिप्त हो जाते हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए उनको समुचित निर्देशन दिया जाना चाहिए।

7. कल्पनाशील क्रियाओं की समस्या

किशोरावस्था में किशोर बालक-बालिकायें कल्पना जगत में विचरण करते रहते हैं। वास्तविक संसार से उनका कोई सरोकार नहीं रहता। वे अपना अलग ही कल्पना का संसार संजोये रहते हैं तथा दिवास्वप्नों में खोये रहते हैं। कल्पना के द्वारा वे अपनी अतृप्त इच्छाओं को पूर्ण करने की कोशिश करते हैं। जिन वस्तुओं को उनको अभाव होता है, उनको वे कल्पना के द्वारा पूरा कर लेते हैं। माता-पिता तथा शिक्षकों को चाहिए कि उनको कल्पना को सृजनात्मक कार्य में लगायें।

8. व्यवसाय चयन की समस्या

किशोरों की एक प्रमुख समस्या व्यवसाय का चुनाव करने की होती है। इस अवस्था में वे अपने लिए उपयुक्त व्यवसाय को चुनने, उसके लिए तैयारी करने, उसमें प्रवेश करने तथा उसमें उन्नति करने के लिए अत्यधिक चिंतित

रहते हैं। पर व्यवसाय के संबंध मे उनका चिंतन बड़ा अवास्तविक होता है। वे साधारण व्यवसायों को पसंद नही करते वरन् ऐसे व्यवसायों को चुनना चाहते हैं जो उनकी योग्यता से बहुत ऊंचे होते हैं।

9. नैतिक और सामाजिक मूल्यों की समस्या

किशोर बालक-बालिकाओं के सामने नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों की समस्या भी अत्यंत कठिन होती हैं। वे इन मूल्यों में बंध महसूस करते हैं एवं इनको अपनी स्वतंत्रता में बाधक मानते हैं। माता-पिता, अध्यापक तथा समाज किशोरों से इन मूल्यों का पालन करने की अपेक्षा रखते हैं और किशोर अपनी एवं अपने साथियों की इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति करना चाहते हैं जिससे इन दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई आती है तथा वे दुविधा में फँस जाते हैं। माता-पिता और शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे किशोरों के आत्म सम्मान को बनाये रखकर और उनकी उचित इच्छाओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप उनकी सहायता करें।